जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१
संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
: सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५३ वे ❖ अंक ४ था ❖ डिसेंबर २०२१ ❖ वीर संवत २५४८ ❖ विक्रम संवत २०७८

या अंकात	पान नं.		पान नं.
• अंतिम महागाथा ३२ : श्रमण जो आत्म श्रम करें	१५	• आजारपाणी जोडीदारांची सेवा सुश्रुषा जीवपाड प्रेमाची खरी भाषा	४५
• श्रध्दा और चारित्र	१९	• हास्य जागृति	४७
• कव्हर तपशील	२५	• जैन शासन के चमकते हीरे	५७
• मौन एकादशी का महत्त्व	२९	• अर्धा ग्लास – पाणी वाचवा	६२
• रतन टाटा की सीख	३२	• कर्म सिध्दांत	६३
• कैसे बँधते है पुण्यानुबंधी व पापानुबंधी पुण्य	३३	• जैन धर्म में सात दुर्व्यसन – त्याग की सामाजिक प्राथमिकता	६५
• सफल होना है तो : ध्यान : अंतरमन की शांती का मार्ग	३५	• गुरु आनंद तीर्थ, चिचोंडी – शिलान्यास	६९
• अ.भा. समग्र जैन संप्रदाय तुलनात्मक तालिका २०२१	३७	• पावापुरी जल मंदिर, पुणे	७०
• जीवन बोध : जीत के रहस्य	४१	• जैन सोशल ग्रुप, पुणे – आनंद	७२
• ऐसे हुई जब गुरु कृपा : खिरा जिसा मत बणो	४२	• श्री. अशोकजी चोरडिया, पुणे	७२
• कर्मवाद यानी पुरुषार्थवाद	४४	• बन्सी रत्न चॅरिटेबल ट्रस्ट – पुरस्कार	७३
		• भवानी माता जैन मंदिर ट्रस्ट, पुणे	७४
		• जागृत विचार	७४
		• श्री. सौरभजी बोरा, मुंबई	७५

- स्काय ब्रिज गृह प्रकल्प, अहमदनगर ७५
- इंदूमती बनसीलाल संचेती ट्रस्ट, पुणे ७९
- संचेती ट्रस्ट फराळ वाटप, पुणे ८१
- श्री. अभयजी संचेती, पुणे – पुरस्कार ८१
- अनंत आमुची ध्येया सक्ती – पुस्तक प्रकाशन ८२
- उपासक दशां – पुस्तक प्रकाशन ८२
- जितो फुड बँक, पुणे ८३
- पुणे म.न.पा. विद्यार्थी अर्थसहाय्य योजना ८४
- आदर्श विवाह संस्था, पुणे ८५
- समन्वय के प्रेरक है श्रीमद् राजचंद्र ८८
- डॉ. मंजुश्री म.सा. – डॉक्युमेंटरी फिल्म ८९
- डायग्नोपिन, मुंबई परेल – उद्घाटन ८९
- धर्म का आलोक ९१
- धर्म के कॉलम में सिर्फ जैन लिखो ९३
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

- www.jainjagruti.in
- www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay, M. 9822086997/AT PAR चेक/पुणे चेकने/ RTGS/SBI Online/ Google Pay/Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA **Branch : Market Yard, Pune 37.**
Current A/c No. : 10521020146 **IFS Code : SBIN0006117**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

श्रद्धा और चारित्र

प्रवचनकार : परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

संसार ने तिरने-तारने का मार्ग बतानेवाले अनन्त ज्ञानी तीर्थंकर भगवन्त तथा तीर्थंकर भगवन्तों को मानने के साथ तीर्थंकर भगवन्तो की वाणी पर सर्वस्व न्यौछावर करनेवाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वंदन।

मार्ग, मार्ग होता है चाहे लौकिक मार्ग हो या चाहे लोकोत्तर। एक जीवन चलाने का मार्ग है तो एक जीवन बनाने का मार्ग है। चाहे लौकिक मार्ग हो या लोकोत्तर अथवा चाहे जीवन चलाने का मार्ग हो या जीवन बनाने का मार्ग, दोनों में एक से नियम लागू होते हैं।

महासतीजी ने एक बात कही थी - आज के इस युग में विशेषज्ञों के सामने सामान्य बात कैसे कहें। तीर्थंकर भगवान महावीर का कथन है बिना सामान्य ज्ञान विशेष ज्ञान होता ही नहीं। चाहे वह मार्ग खाने का है या पीने का, चलने का मार्ग है या निर्वाण का। हर मार्ग के चार चरण हैं। मोक्ष मार्ग के भी चार चरण हैं। इसी तरह संसार के हर मार्ग के चार चरण हैं। आपको निमाज से जोधपुर जाना है या निमाज से जयपुर जाना चाहते हो तो आपको किसी-न-किसी से मार्ग पूछना पड़ेगा कि यह मार्ग किधर जाता है? कौनसा रास्ता है जो जोधपुर की ओर जाता है? आपने रास्ता पूछ लिया पर रास्ता बताने वाला बच्चा था। आपने सोचा कि बच्चा है, उसने शायद हँसी-मजाक में रास्ता बता दिया हो। हो सकता है उसने ठिठोली में कह दिया हो इसलिए आप बच्चे के बजाय किसी ओर से पूछते हैं। एक से पूछा, दूसरे से पूछा फिर भी विश्वास नहीं तो.....? एक आदमी आ रहा था। उससे पूछा-भाई! तुम कहाँ से आ रहे हो?

वह बोला - ''मैं जोधपुर से आ रहा हूँ।'' जोधपुर से आ रहा हूँ तो आपको विश्वास हो गया, आप उस रास्ते पर बढ़ जायेंगे।

आपको सुनी-सुनाई बात से विश्वास नहीं होता इसलिए एक के बजाय दो-तीन से पूछते हैं। मैं मेरी नहीं वीतराग भगवन्तों की बात कहूँ - जिस दिन विश्वास जग जाएगा तो फिर प्रेरणा करने की जरूरत नहीं होगी।

मैं कह रहा हूँ - ''हिंसा, हिंसा है। झूठ, झूठ है। हिंसा में पाप हैं, झूठ में पाप है।'' मैं कहता रहूँ तो भी आप मानेंगे नहीं, पर जब आपको विश्वास हो जाएगा तो आप स्वतः मानेंगे।

राजा हरिश्चन्द्र के बेटे को सांप काट गया और उसकी मृत्यु हो गई। जलाने के लिए कफन नहीं मिला। आपको सारा वृतान्त ज्ञात है। पत्नी गई, राज-पाट गया, सबकुछ गया पर, मेरा सत्य धर्म रहना चाहिए। सत्य पर कैसी श्रद्धा? आपकी श्रद्धा है या नहीं? जिस दिन विश्वास जग जाएगा तो आप सत्यवादी के पास बैठेंगे, उसकी बात सुनेंगे। मेरी बात नोट करना - विश्वास है तो आप अपने घर की और तिजोरी की चाबी बेटे के बजाय नौकर को दे देंगे। क्यों? नौकर पर विश्वास है, बेटे पर विश्वास नहीं। लाखों की नहीं, करोड़ों की सम्पदा नौकर के भरोसे छोड़ देंगे क्यों तो आपको विश्वास है। जिसके प्रति विश्वास है उससे आप व्यवहार रखेंगे।

मैंने कभी देखा था। दो आदमी मोटर में यात्रा कर रहे थे। दोनों की पास-पास सीट थी। एक व्यक्ति दूसरे को गुलाबजामुन की मनुहार करता है, शरबत पीने को कहता है पर गुलाब जामुन और शरबत की मनुहार ठुकरा दी जाती है। क्यों तो विश्वास नहीं।

मैं पूछूँ - ''आपको मेरी बात पर कितना विश्वास

हैं? मेरी बात जाने दीजिए भगवान की वाणी पर आपको कितना विश्वास है? मेरी बात पर विश्वास है तो फिर प्रेरणा की जरूरत नहीं। मैंने दृष्टान्त दिया कि मोटर में साथ यात्रा करते हुए गुलाब जामुन की मनुहार ठुकराई जा रही है। शरबत पीना तो दूर, पानी भी जब तक विश्वास नहीं, कोई नहीं पीता। पास वाले यात्री के पास ठण्डा पानी है, उसके बजाय जैसे ही मोटर रुकती है वह नीचे उतर कर नल का पानी गर्म भी है तो पीने में संकोच नहीं करता।''

तीर्थंकर भगवन्त कहते हैं – ''ज्ञान वह है जो श्रध्दा से जुड़ा है। श्रद्धा के बिना ज्ञान, ज्ञान नहीं, कुज्ञान अज्ञान है। श्रद्धा के बिना न ज्ञान है और न चारित्र ही है। सम्यक् दर्शन है तो ज्ञान, ज्ञान है। चारित्र, चारित्र है। सम्यक् दर्शन के अभाव में ज्ञान कुज्ञान है तो चारित्र भी कुचारित्र है। ऐसे सैकड़ो लोग है, जिन्होनें एक-दो बार नहीं, सैंकड़ों बार प्रतिज्ञाएँ कर लीं और सैंकड़ों बार प्रतिज्ञाएँ तोड़ लीं। मीरा को अपने प्रियतम पर विश्वास है। ठाकुर साहब कह रहे हैं – ले, यह गोपाल का प्रसाद है। मीरा लेती है। गोपाल के प्रसाद रूप ज़हर को यह समझकर पान कर रही है कि मैं जीती रहूँगी तो उसका भजन करूँगी और मर जाऊँगी तो प्रियतम को पा लूँगी। मीरा ज़हर को अमृत मानकर पीती है। आपको ऐसा विश्वास है या नहीं?''

आपको शायद न अपने-आप पर भरोसा है, न भगवान पर इसीलिए आप सोचते हैं कि मैं यदि चला गया तो बच्चे का क्या होगा? पत्नी का क्या होगा? घर-परिवार का क्या होगा? आपको फिक्र है, क्योंकि आपको विश्वास नहीं।

आप अभी प्रवचन सभा में बैठे हैं। भगवान की वाणी पर जितना विश्वास होना चाहिए उतना नहीं इसलिए कुछ हैं, जिन्हें यहाँ भी नींद आती है। कई हैं जो बार-बार घड़ी की ओर देखते हैं कि कब व्याख्यान पूरा हो और कब घर जाएँ। भरोसा है तो ही बैठना, बोलना, साथ रहना अच्छा लगता है। भरोसा नहीं तो.....?

एक पत्नी अपने पति से रोज कहती है – ''आप व्याख्यान में जाओ, महाराज चातुर्मासार्थ आए हुए हैं। कदई तो म्हारो केणो मानो।'' भाई साहब का जवाब होता है – ''आज नहीं, कल।'' पत्नी रोज कहती है पति का एक ही जवाब होता है – 'आज नहीं, कल।' कल-कल करते डेढ़ महीना बीत गया, पर श्रावकजी महाराज के दर्शनार्थ आए ही नहीं। एक दिन श्रावकजी को बुखार आ गया। दवा मंगवाई गई। दवा मंगाकर, दवा को अलमारी में रख दी। दवा माँगे तो आज नहीं कल। पत्नी कहती आज दवा नहीं लोगे तो मरोगे तो नहीं? कल दवा के लिए कहा गया तो जवाब मिला – आज मुहूर्त ठीक नहीं, दवा कल लेना। बुखार में एक दिन दवा नहीं मिल रही है तो आदमी लड़ने पर उतारू हो जाता है। बुखार में दवा नहीं तो बुखार १०५ डिग्री हो गया।'' पत्नी ने कहा – ''कल, कल करते आपको डेढ़ माह हो गया। आपको कल क्या होता है मालूम हुआ या नहीं?''

एक है चरित्र और एक है चारित्र। भारतवर्ष का चरित्र पूरी दुनियाँ में गुरु बनने के लायक था। आज भी इस देश का चरित्र अन्य देशों से अच्छा है। इस देश में अनेक गुरु बने, अनेक गुरु हैं भी। गुरु ही नहीं, भगवान बने हैं। मैं जैन धर्म की वेशभूषा से ही मुक्ति होती है, ऐसा नहीं कहता, पर इतना जरूर कहता हूँ कि जो भी धर्म का आचरण करता है वह तिरता है। तिरने के लिए न वेश चाहिए न स्थान चाहिए। तिरने के लिए विश्वास चाहिए। जो भी पाप छोड़ता है, वह तिरता है। वह चाहे वेशधारी है या निर्वेशी है। वह लाल कपड़े पहनता है या काले अथवा सफेद। वह चाहे जिस स्थान पर है, भले ही वह स्थानक या श्मशान ही क्यों न हो जो भी चारित्र धर्म की पालना करता है वह पार होता है।

धर्म का पूरा पालन चारित्र है, पर एक अंश में भी धर्म का पालन चरित्र है। दो शब्द हैं। एक है चरित्र और दूसरा है चारित्र। एक जीव मात्र पर दया करता है। उसमें सत्य हैं, सहनशीलता है, सबके प्रति प्रीति और मैत्री है तो लोग कहते हैं - वह आदमी नहीं, देवता है। चरित्र और चारित्र में एक मात्रा का फर्क है। एक दयालु ऐसा भी होता है जो कीड़े-मकोड़ों को गुड़ के पीपे में डालकर छोडता है। एक तालाब में पानी कम रह गया, मछलियों को मरने से बचाना है इसलिए उन्हें पकड़कर दूसरे तालाब में जहाँ पानी है, छोड़ता है। वह यह नहीं सोचता कि मरनेवाला अपने कर्म से मरता है। मैं किसे-किसे बचाऊँ?

मैं चारित्र की बात कहने जा रहा हूँ। दया, सत्य, क्षमा, शील, सहनशीलता जैसे गुण कब आएँगे। ये सद्‌गुण तब आएँगे जब भीतर में विश्वास जगेगा। आप मेरी बात नोट करना। पानी को कहीं डाल दें, वह जिधर ढलान होगा, उधर बह जाएगा। एक होता है दिशा सूचक यंत्र। आप उसे कंपास कहते हैं। उसका कांटा किधर जाएगा? दिशा सूचक यंत्र का कांटा उत्तर की ओर ही रहेगा, भले ही आपने उसको उत्तर के बजाय दूसरी दिशा में ही क्यों न रखा हो। धुआँ है उसे आप दबाकर नहीं रख सकते, धुआँ ऊपर की ओर ही जाएगा। पत्थर को आप पानी में डालो। पत्थर का स्वभाव डूबने का है। मैं ऐसे कई दृष्टान्त कह सकता हूँ, पर श्रद्धा वाले का व्यवहार किसी के दुख को देखकर उसके दुख दूर करने का रहता है। वह खुद दुख पा लेगा, किन्तु दूसरों के दुख को दूर करने की उसकी कोशिश रहेगी।

पुराने जमाने की बात है। एक विदेशी कुएँ की पाल पर रत्नों की पोटली रखकर चला गया। बहिनें कुएँ पर पानी भरने आई। देखा, पाल पर पोटली पड़ी है। बहिनों ने जाते हुए को आवाज लगाई - भाई! ठहरो। तुम्हारी पोटली यहाँ रह गई।

बहिनों ने दौडकर उस पोटली को पहुँचाया। पानी भरना छोड़कर जिसकी पोटली थी, उसे पहुँचाना इस देश का चरित्र रहा है। एक वह उदाहरण है तो आज कभी छत पर सुखाई धोती उड़कर आस-पास किसी के घर में चली जाय तो.....? मैं किन-किन बातों को कहूँ आज तो मंदिर में जूते खोलो तो जूते गायब। स्थानक से जूते चले जाते हैं, यह क्या है?

भारत वर्ष का चरित्र क्या था? मैं सुनी हुई, पढ़ी हुई बात सामने रख रहा हूँ। इस देश में जीभ खींच कर मरने वाली शीलव्रती बहिनें हुई है। अग्नि कुण्ड में जीते जी कूदकर शील पालने वाली बहिनें भी इस देश में हुई है। वह इस देश का चरित्र था। आज क्या हो रहा है? आज कुछ भाई हैं जिनके द्वारा किसी को धर्म बहन बनाया जाता है। वह कैसी धर्म बहिन है? आप जानते हैं, मुझे इस सम्बन्ध में नहीं कहना।

आज चारित्र - दिवस है। चारित्र क्या, इसका चिंतन करें। आपका चारित्र्य क्या, देश का चारित्र क्या? एक रिक्शे वाला है। वह रिक्शा चलाता है। चलते-चलते हांफ रहा है, श्वास भर रहा है। रिक्शे में बैठनेवाला भाई अपना बैग रिक्शे पर भूल जाता है। रिक्शा छोड़कर वह घर में पहुँच जाता है। रिक्शेवाले की नजर बैग पर जाती है वह मालिक के पास उसका बैग पहुँचाता है यह चारित्र का एक नमूना है।

इस देश का चरित्र बहुत ऊँचा रहा है। यहाँ न जाने कितने-कितने संत हुए, कितने महापुरुषों ने अपने चरित्र की छाप छोड़कर देश का नाम रोशन किया। मैं कहूँ इस देश में पूर्व जन्म की करणी करने वाले वैरागी हुए हैं। तीर्थंकर भगवन्तों ने किसी का उपदेश नहीं सुना, वे करणी करके जन्में, तीर्थंकर नाम-कर्म के उदय के साथ उनका जन्म हुआ। इस देश में पूर्व जन्म की करणी करनेवाले वैरागी हुए तो पेट में रहकर वैरागी बननेवाले

भी इस देश में हुए है। अभिमन्यु ने पेट में रहते चक्रव्युह भेदन की कला सीख ली। आचार्य श्री हस्ती माँ के पेट से वैरागी हुए। आर्य वज्र का नाम आपने सुना है वे जन्म से वैरागी हुए। जन्म के साथ जो भी आता बच्चे के जन्म की बधाई में कहता आज यदि इसके पिता होते तो वे कितने खुश होते पर, उन्होंने तो दीक्षा ले ली। हर आनेवालों से दीक्षा शब्द सुन-सुनकर वैराग्य आ गया। माता मदालसा ने पालने में झूलने वाले सात बच्चों को संस्कार देकर वैरागी बना दिया। कुछ बचपन के वैरागी हैं। माँ ने कहा - बेटा! गांव में संत आए हुए हैं। तुम संतों के पास जाकर प्रतिक्रमण सीख लो तो गाँव में प्रतिक्रमण करानेवाला तो कोई होगा। आचार्य श्री आनन्दऋषिजी महाराज को बचपन में प्रतिक्रमण सीखते-सीखते वैराग्य आ गया। वे संतों के चरणों में संत बन गए।

एक भाई को संघ का अध्यक्ष बनाया गया। अध्यक्ष है तो कम-से-कम रोज एक सामायिक तो करनी ही चाहिए। अध्यक्ष बना, वह भाई बोला-रोज सामायिक करना मुश्किल है। प्रेरणा के लिए कहा गया - रोज नहीं तो एक दिन छोड़कर सामायिक करनी चाहिए। एक दिन छोड़कर सामायिक करना भी नहीं हुआ तो ऐसे लोगों के लिए क्या कहा जाए?

कई हैं जो कहते हैं कि मैंने सत्तर साल पहले गुरुदेव से माला जपने का नियम लिया, आज तक नियम का बराबर पालन कर रहा हूँ। कितने वर्ष हो गए? कब नियम लिया? नियम लिया उसके बाद वह बाप नहीं, दादा बन गया, नियम अभी वही का वही है। आगे कब बढ़ेगा? क्या श्मशान में जाने तक यही माला का नियम चलता रहेगा? मुझे कहना है - अभी धर्म पर श्रद्धा नहीं है। जिस दिन धर्म पर श्रद्धा हो जाएगी चारित्र में चरण बढ़ाना भारी नहीं लगेगा। बंदोले खाते-खाते वैरागी बने हैं। रायचन्दजी बन्दोले खा रहे थे, किसी ने मजाक की - क्या वैरागी बनकर बंदोले खा रहे हो और वे संत बन गए। पूछ लिया - क्या वैरागी आया है? आचार्य उदयराजजी महाराज शादी के लिए घोड़ी पर बैठे हुए थे। पुराने जमाने में सासू नाक खींचती थी, सासू आई। वह नाक खींचने को ज्यों ही हाथ बढ़ाती है, दूल्हा अपना सिर पीछे करता है तो साफा गिर जाता है। सिर से साफा गिरते ही सोचा - यह मंगल की जगह अमंगल हो गया है, मुझे अमंगल के रास्ते पर क्यों जाना? वे विरक्त होकर महाराज ही नहीं बने, संघ के आचार्य बन गए।

रामदासजी की शादी हो रही थी। शादी करानेवाले पंडित ने हाथ जुड़वाए और कहा सावधान। अब तुम्हारे पर यह बड़ी जिम्मेदारी आ रही है। सावधान शब्द सुनकर रामदासजी का चिंतन चला कि आज तक मैं जैसा चाहता, वैसा करता था। अब मेरे बेड़ी लग रही है, मुझे जिम्मेदारी निभानी होगी। एक सावधान शब्द सुनकर रामदासजी चंवरी से उठे और जाकर बाबाजी बन गए।

मैं कितने - कितने उदाहरण रखूँ? मुझे तो यह चिंता हो रही है कि आप रोज सुनते है फिर भी आपको वैराग्य क्यों नहीं आ रहा? आपको वैराग्य इसलिए नहीं आ रहा है कि आपका मन धन में हैं, परिवार में है, पद और प्रतिष्ठा में हैं। अभी धर्म में मन नहीं रमा है। जिस दिन धर्म में मन लग जाएगा आपको प्रेरणा करने की जरूरत नहीं रहेगी। आचार्य मानतुंग जी ने एक-एक श्लोक की रचना क्या की, ४८ ताले खुल गए और वे दरबार में पहुँच गए।

आपने एक कहावत सुनी होगी। कहावत है - सांचे माचे राम। जहाँ सत्य है वहाँ राम है। अभी सत्य आचरण में नहीं आया। जिस दिन सत्य आचरण में आ जाएगा तो फिर किसी को यह कहने की नौबत नहीं आएगी कि उसका राम निकल गया।

मैं कभी किसी घर में गोचरी गया। माँ बच्चे के सम्बन्ध में कहने लगी - ओ म्हारी तो सुणे इ कोनी। शायद बच्चा बहरा हो, पर वह बच्चा बहरा नहीं था, सुणे कोनी का मतलब है वह सुनता तो है, किन्तु माँ का कहा नहीं करता। वह माँ जो कह रही थी, वही बात मैं कह रहा हूँ कि मेरी कोई सुनता नहीं।

एक घर में पति पत्नी के बीच में लड़ाई हो रही थी। पत्नी बोली - थांने जितो मारणो होवे, मार लो। मार-मार ने म्हारा हाडका तोड़ दो, मैं तो ऊबी आई हूँ, आडी जाऊँ तो राम-नाम सत्य है, सुनना पड़ेगा और यदि खड़े-खड़े घर से निकल गए तो जय-जयकार होगी।

आप चारित्र में चरण बढ़ाना चाहें तो सारे पाप एक साथ न भी छोड़ सको तो एक एक पाप छोड़ने का प्रयास करो। जितने-जितने पाप छूटेंगे उतनी-उतनी मात्रा में आप धर्म के सम्मुख होते जाएँगे। आप हिम्मत करो, दृढ़ संकल्प करके पाप छोड़ने का प्रयास करो। छोड़ने वालों ने तैंतीस वर्ष की उम्र में शीलव्रत का खंद किया। उनतीस वर्ष की अवस्था में शीलव्रत का खंद हुआ है। आप शीलव्रती बनें। आप कोई एक व्रत भी लें, पर लें जरूर। मैं झूठ नहीं बोलूँगा, मैं शील का पालन करूँगा, मैं हिंसा नहीं करूँगा, जो भी आपसे बन सके वह नियम लें। क्रोध नहीं करुँगा, संतोष रखूँगा यह भी नियम है। आपके संघ में ऐसे-ऐसे श्रावक हुए जिनका संकल्प था कि पाँच रुपये की कमाई हो जाने पर दुकान बंद करके स्थानक में जाकर सामायिक करूँगा। आज पाँच रुपये की ही नहीं, पाँच करोड़ की कमाई हो जाने पर संतोष नहीं होता। आप जो भी व्रत-नियम लेना चाहें लें, मगर नियम लेने से कोई वंचित नहीं रहे। एक-एक पाप छोड़ने वाला चारित्र में चरण बढ़ा सकेगा, इसी मंगल भावना के साथ....। ●

शांततापूर्ण आयुष्यासाठीचे सात नियम

१. भूतकाळाशी तह करून टाका. म्हणजे तो तुमचे भविष्य नासवून टाकणार नाही.

२. तुमच्याविषयी बाकीचे काय विचार करतात, याच्याशी तुम्हाला काहीही देणे घेणे नसावे.

३. काळ हा सगळ्या गोष्टी बऱ्या करत जातो. त्यासाठी काही वेळ जाऊ द्या. थोडा वेळ तरी द्या.

४. तुमच्या आनंदासाठी केवळ तुम्हीच कारणीभूत असता. बाकीचे कुणीही त्यासाठी जबाबदार नसतात.

५. तुमच्या आयुष्याची इतरांशी तुलना करू नका. त्यांचा प्रवास कसा झालेला आहे. याची तुम्हाला काहीही माहिती नसते.

६. अतिविचार करणे थांबवा, सगळ्याच गोष्टींची उत्तरे माहिती असली पाहिजेत, असा काही नियम नाही.

७. चेहऱ्यावर हास्य ठेवा, जगातील सगळ्या प्रश्नांची जबाबदारी तुमच्यावर देण्यात आलेली नाही.●

मे. एन्. बन्सीलाल

१४८५ शुक्रवार पेठ, गंजीवाले बिल्डिंग, बाजीराव रोड, शनिपार चौक, पुणे - ४११ ००२. फोन : २४४५५८५७

प्रफुल्ल सुरपुरिया - ९८२३०४३५०५, ९३७१०००००६५ निवास : २४४२५०३१

पर्गोलॅक्स, सॅन्टोमीक्स, ओवामील, जाई काजल, शर्मिली मेहंदी व मेहंदी कोन, हॅलोबेबी फिडींग बॉटल्स् व निपल्स्, आयुर्वेदिक औषधीयुक्त हेमला, सुगंधी शिकेकाई व आयुर्वेदिक सुगंधी हेमला उटणे, एहसान अत्तर व परफ्युम, इत्यादी उत्पादनांचे डिस्ट्रीब्युटर्स

कव्हर तपशील - डिसेंबर २०२१

❖ **गुरु आनंद तीर्थ, चिचोंडी**

आचार्य भगवंत श्री आनंदऋषिजी म.सा. यांचे जन्मस्थान असलेल्या चिचोंडी, जिल्हा अहमदनगर येथे भव्य गुरु आनंद तीर्थ उपाध्याय प्रवर श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. यांच्या मार्गदर्शनात साकार होत आहे. आनंद तीर्थ येथे पंचतीर्थ साकार होणार आहे. यापैकी नवकार तीर्थ कलश व समवशरण तीर्थ यांचा शिलान्यास समारोह १४ नोव्हेंबर २०२१ रोजी भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाला. (बातमी पान नं. ६९)

❖ **कु. श्रेया जैन, दीक्षा – पुणे**

रविवार पेठ वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ सादडी सदन, पुणे या संघात २८ ऑक्टोबर २०२१ रोजी कु. श्रेया जैन हीची दीक्षा संपन्न झाली. युवाचार्य श्री महेंद्रऋषिजी म.सा., उपप्रवर्तक श्री तारकऋषिजी, उपप्रवर्तनी दिव्यज्योतिजी म.सा. आदि ठाणा यांच्या पावन निश्रेत अनेक मान्यवरांच्या उपस्थितीत दीक्षा संपन्न झाली.

❖ **संचेती ट्रस्ट, पुणे – पुरस्कार**

स्व. इंदूमती बनसीलाल संचेती ट्रस्टच्या वतीने १४ नोव्हेंबर २०२१ रोजी आदर्श माता, आदर्श पिता, आदर्श पुत्र पुरस्कार देण्यात आले. आदर्श माता पुरस्कार सुशिलाबाई लुणावत आणि शकुंतलाबाई कोठारी तर पृथ्वराजजी धोका यांना आदर्श पिता, सरहद्दचे संजयजी नहार यांना आदर्श पुत्र पुरस्काराने गौरविण्यात आले. तसेच डॉ. अशोकजी संचेती आणि आदेशजी खिंवसरा यांना कोरोना योध्दा पुरस्काराने सन्मानित करण्यात आले.

यावेळी माजी मुख्यमंत्री पृथ्वीराजजी चव्हाण, खासदार श्रीरंगजी बारणे, महाराष्ट्र राज्य काँग्रेसचे सरचिटणीस अभयजी छाजेड, विजयकांतजी कोठारी, ओमप्रकाशजी रांका, जैन कॉन्फरन्स माजी अध्यक्ष पारसजी मोदी, रुचीराजी सुराणा, ट्रस्टचे अध्यक्ष अभयजी संचेती, श्री. विजयजी भंडारी, श्री. राजेशजी सांकला, श्री. मोहनलालजी संचेती, श्री. विजयजी शिंगवी, श्री. किशोरजी संचेती, श्री. मनिषजी संचेती इ. मान्यवर उपस्थितीत होते. (बातमी पान नं. ७९)

❖ **जितो फुड बँक, पुणे**

जितो फुड बँक पुणे तर्फे २४ ऑक्टोबर २०२१ रोजी महावीर प्रतिष्ठान येथे दीपावली स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजन करण्यात आले. यावेळी साधर्मिक बंधूना कपडे, मिठाई, धान्य इ. देण्यात आले. या कार्यक्रमास श्री. प्रकाशजी धारीवाल, श्री. ओमप्रकाशजी रांका, श्री. विजयकांतजी कोठारी, श्री. विजयजी भंडारी, श्री. अभयजी छाजेड, नगरसेवक श्री. प्रवीणजी चोरबेले व फुड बँकेचे सर्व पदाधिकारी उपस्थित होते. यावेळी जितो फुड बँकेचे चेअरमन व सामाजिक, धार्मिक कार्यात अग्रेसर श्री. राजेंद्रजी बाठिया व बाठिया परिवारांचा विशेष सन्मान करण्यात आला. (बातमी पान नं. ८३)

❖ **श्री आदिनाथ स्थानक व गौतमलब्धी फौंडेशन, पुणे – फराळ वाटप**

पुणे येथील श्री आदिनाथ स्थानकवासी जैन भवन ट्रस्ट आणि गौतमलब्धि फौंडेशन यांच्या संयुक्त विद्यमाने मोफत लाडू आणि चिवडा वाटण्यात

आला. सकल जैन संघाचे अध्यक्ष विजयकांतजी कोठारी आणि डायलिसिस सेंटरचे प्रणेते श्री. सतिशभाऊ बनवट यांच्या वाढदिवसाच्या निमित्ताने या योजनेचा शुभारंभ करण्यात आला. यावेळी सत्कार मुर्तीच्या सोबत गौतमलब्धीचे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. अनिलजी नाहर, श्री. संजयजी सांकला, श्री. भरतजी चंगेडे, श्री. विजयजी नवलखा इ. मान्यवर. (बातमी पान नं. ७१)

❖ **सुर्यदत्ता ग्रुप, पुणे**

पुणे : सूर्यदत्ता संचालित बन्सी-रत्न चॅरिटेबल वेल्फेअर ट्रस्टतर्फे 'आदर्श माता - पिता पुरस्कार' चंचला व मोतीलाल सुराणा यांना, तर सुशिलाबाई बंब यांना समाजरत्न पुरस्कार, डॉ. अशोककुमार पगारिया यांना समाज शिरोमणी पुरस्कार, महावीर नहार यांना समाजभूषण पुरस्कार व डॉ. रसिक सेठिया यांना मानवसेवा पुरस्कार प्रदान करण्यात आले.

संस्कार भारती, वाणीभूषण परमपूज्य प्रीतिसुधाजी महाराज, मधुस्मिताजी महाराज व अन्य साध्वी महाराज साहेबांच्या उपस्थितीत, ज्येष्ठ गायक, भजनसम्राट अनुप जलोटा, ज्येष्ठ अभिनेते रझा मुराद यांच्या हस्ते हे पुरस्कार प्रदान करण्यात आले. सुर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूटचे संस्थापक अध्यक्ष प्रा. डॉ. संजयजी चोरडिया, उपाध्यक्ष सुषमाजी चोरडिया, मुख्य विकास अधिकारी सिद्धांतजी चोरडिया, कार्यकारी संचालक प्रा. सुनीलजी धाडीवाल, प्रा. अक्षितजी कुशल, रोशनीजी जैन आदी उपस्थित होते. (बातमी पान नं. ७३)

❖ **भवानी माताजी जैन मंदिर ट्रस्ट, पुणे**

पुणे : भवानी माताजी जैन मंदिर ट्रस्ट तर्फे आदर्श माता पुरस्कारांचे वितरण दि. १० ऑक्टोबर २०२१ रोजी करण्यात आले. महाराष्ट्र राज्याचे शिक्षण आयुक्त श्री. विशालजी सोळंकी, श्री. विजयकांतजी कोठारी, श्री. युवराजजी शहा मान्यवरांच्या हस्ते मातोश्री सौ. सुशिलाबाई कांतीलालजी नाहर, मातोश्री श्रीमती अरुणाबाई कांतीलालजी नाहर या दोन्ही मातांना आदर्श माता पुरस्कार देण्यात आला. यावेळी सोबत श्री. राजेशजी नाहर, श्री. रविंद्रजी नाहर, श्री. सुभाषजी नाहर इ.. (बातमी पान नं. ७४)

❖ **श्री. सौरभजी बोरा, मुंबई – कौतुक सोहळा**

देशातील प्रतिष्ठित व जगातील श्रीमंत देवस्थान म्हणून ओळख असलेल्या तिरुमला येथील तिरुपती देवस्थान ट्रस्ट सदस्यपदी मुंबई निवासी श्री. सौरभजी हेमराजजी बोरा यांची नियुक्ति झाल्याबद्दल सौरभजी बोरा यांच्या भगिनी डॉ. सौ. जयश्री - डॉ. प्रदिपजी खिंवसरा, सौ. अरुषा अतुलजी बोरा, सौ. दिपाली किशोरजी भंडारी यांनी हॉटेल हयात रिजेन्सी, पुणे येथे कौतुक सोहळ्याचे आयोजन केले. (बातमी पान नं. ७५)

❖ **श्री. अशोकजी चोरडिया, पुणे**

पुणे येथील उद्योजक व सॉलिटेयर ग्रुप व अर्जुन चॅरिटेबल ट्रस्टचे चेअरमन श्री. अशोकजी धनराजजी चोरडिया यांच्या तर्फे दिवाळी निमित्त महाबळेश्वर येथील ग्रामस्थांना अन्न धान्याचे किट, पाण्याचे पाईप व मिठाई बॉक्स वाटण्यात आले. (बातमी पान नं. ७२)

❖ **डायग्नोपिन, मुंबई परेल – उद्घाटन**

वडगाव शेरी, पुणे येथील उद्योजक श्री. प्रफुल्लजी कोठारी व श्री. मितेशजी कोठारी यांनी डायग्नोपिन, कोठारी डायग्नोस्टीक सेंटरची नवीन ब्रँच मुंबई, परेल येथे सुरु केली आहे. या ब्रँचचे उद्घाटन महाराष्ट्र राज्याचे पर्यावरण कमिशनर श्री. विजयजी नाहटा यांच्या हस्ते व गुरु गौतम ट्रस्टचे संस्थापक श्री. सतिशजी बनवट, युवासेना शहर अध्यक्ष श्री. नितीनजी भुजबळ, डॉ. बिनलजी शहा, श्री. प्रफुल्लजी कोठारी, श्री. मितेशजी कोठारी इ. यांच्या उपस्थितीत संपन्न झाला. (बातमी पान नं. ८९) •

मार्गशीष शुक्ला एकादशी : मौन एकादशी (१४ डिसेंबर २०२१)

मौन एकादशी का महत्त्व

लेखक : श्री ज्ञानमुनिजी म.सा.

मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी की अपनी अलग ही कुछ विशेषताएँ हैं। वैसे तो प्रति मास दो एकादशी आती है पर उसके गीत नहीं गाये जाते। जिस तिथी के साथ किसी महापुरुष का सम्बन्ध जुड़ जाता है, वह तिथी इतिहास के पवित्र पृष्ठों पर हमेशा के लिए आजर-अमर पद को प्राप्त कर लेती है।

आज की इस तिथी के साथ भी ऐसी ही घटना सम्बन्धित है। अतः इस तिथी को मौन एकादशी के रूप में मनाया जाता है। वह सम्बन्ध है - वर्तमान अवसर्पिणी काल के १९ वे तीर्थंकर भगवान अरनाथ की दीक्षा, १८ वें तीर्थंकर भगवती मल्लिकुमारी का जन्म, दीक्षा और केवल ज्ञान तथा २१ वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के केवलज्ञान प्राप्ति का।

इस प्रकार ५ कल्याणक होने से तथा ५ भरत के २५ और ५ एरावत के २५ इस प्रकार ५०, एवं भूतकाल, वर्तमान काल तथा भविष्यकाल के ५०-५० होने से आज की इस पावन वेला में १५० कल्याणक मनाये जाते हैं।

प्रश्न और जिज्ञासा –

भगवती मल्लिकुमारी से इस तिथी का विशेष सम्बन्ध होने से पाठकों के मन में निम्न प्रश्न उठा करते हैं –

१. ये दिवस कल्याणक क्यों कहे जाते हैं?

२. आज की एकादशी मौन एकादशी के नाम से क्यों प्रसिद्ध है?

३. कुमारी मल्ली ने गृहस्थ जीवन में स्त्री होते हुए भी छह राजाओं को कैसे प्रतिबोधित किया?

४. मल्ली भगवती स्त्री होकर भी तीर्थंकर कैसे?

समाधान –

उपर्युक्त प्रश्नों का समाधान इस प्रकार किया जा सकता है –

१. इस संसार में चार प्रकार के दुख बहुत ही भयंकर है, जैसा की शास्त्रों में बताया गया है –

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य।
अहो दुक्खो हु संसारे, जत्थकीसन्तिजन्तुणो ।।

अर्थात् जन्म, जरा, रोग तथा मरण - ये ही दुख के भयंकर कारण है। ये भयावह है, कष्टप्रद है और हैं - चतुर्गति रूप संसार में संक्लेश दिलाने वाले, किन्तु प्रत्येक तीर्थंकर भगवान हमेशा-हमेशा के लिए इन कष्टों से सर्वथा मुक्त होते हैं। अब उन्हें माँ के गर्भ में न आना है, न जन्म लेना है, न दीक्षित होना है और न बार-बार मरना ही है। बस, सब काम अन्तिम होने से वे अपने कार्य में कृतकृत्य हो चुके हैं। अब उन्हें किसी प्रकार की साधना अवशेष नहीं है। अतः उनके च्यवन जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान एवं परिनिर्वाण को कल्याणक दिन कहना शास्त्र संगत ही प्रतीत होता है।

२. जैन जगत् में आध्यात्मिक साधना करने वाले साधकों की किसी भी काल में कमी नहीं रही है। वे घोर से घोर व कठोर से कठोर तप साधना करके अपने जीवन में कृत-कृत्य बने हैं।

पर किसी महापुरुष को साधना करने में वर्षों लगे है तो कुछ महापुरुष ऐसे भी रहे है, जिन्होंने अल्प, अत्यल्प समय में ही संयम-साधना एवं तप-आराधना के बल से कैवल्य प्राप्त कर लिया। ऐसे साधकों की सुन्दर श्रृंखला में भगवती मल्ली कुमारी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। वैसे तो नारी अबला, निर्बल,

शक्तिविहीना कही जाती है, पर जब वह दृढ़ मनोबल से साधना में लगती है, तब बड़े-बड़े पुरुषों को भी मात कर देती है। फूलों की शय्या पर लेटने वाली नारी तत्काल काँटो की कंटीली भूमिका पर पैदल भ्रमण करने में भी नहीं हिचकिचाती। इसका जीता जागता उदाहरण भगवती मल्ली का है।

कुमारी मल्ली ने दीक्षा ग्रहण करते ही साधना के बल पर सवा प्रहर के लगभग समय में ही केवलज्ञान प्राप्त कर लिया। प्रत्येक तीर्थंकर का ऐसा नियम होता है कि वे छद्मस्थ अवस्था में प्रायः मौन रहते हैं। पर २३ तीर्थंकरों का छद्मस्थकाल बहुत लम्बा था। वर्षों साधना करने के पश्चात् उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। अतः इतने दीर्घकाल तक मौन रखना किसी भी साधक के लिए सुलभ प्रतीत नहीं होता, पर एक दिन अथवा सवा प्रहर मौन रख लेना कोई कठिन तथा असम्भव बात नहीं है, किन्तु वह सवा प्रहर कौनसा लिया जाय, इससे अनभिज्ञ होने से साधकों ने सम्पूर्ण दिन मौन रखना स्वीकार किया। अतः यह पर्व मौन एकादशी के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

साथ में एक दूसरी किंवदन्ति भी सुनने में आती है कि जब भगवती मल्ली का स्त्री रूप में जन्म हुआ, तब उनके माता-पिता तथा जनसमूह आश्चर्यान्वित हो कहने लगे-अरे यह क्या? ज्योतिषियों ने तो बताया था कि मिथिलेश कुम्भ की पत्नी प्रभावती की कुक्षि से जो पुत्र रत्न पैदा होगा, वह चक्रवर्ती या तीर्थंकर बनेगा, फिर यह अनहोनी घटना कैसे घटित हुई? सब के सब स्तब्ध से रह गये। कुछ समय तक तो उनसे बोला तक भी नहीं गया। मौनस्थ बन गये। जनता ने उस दिन को मौनस्थ बिताया एवं उस तिथी की स्मृति बनी रहे, अतः प्रतिवर्ष मिगसर (मार्गशीर्ष) शुक्ला एकादशी को मौन एकादशी के रूप में मनाया जाने लगा।

३. भगवती मल्ली कुमारी अनिन्द्य सुन्दरी थी। उनके सौन्दर्य की ख्याति सर्वत्र दूर-दूर तक फैल चुकी थी। उनके रूप-सौन्दर्य व गुणों से प्रभावित हो दीपक पर पतंगे की भाँति साकेतपुर के अधिपति प्रतिबुद्ध, चम्पा के अधिनायक चन्द्रछांग, श्रावस्ती के मालिक रूप्पी, काशीपति शंख, गुरु देश के स्वामी अदीनशुत्र और कंपिलपुर के राजा जितशत्रु ने महाराज मिथिलेश को दूत द्वारा सूचित करवाया कि ''आप मल्ली कुमारी का विवाह हमारे संग करवा दीजिए ताकि परस्पर प्रेम बना रहे, अन्यथा युद्ध की तैयारी कीजिए।''

इस पर कुम्भ राजा का चिन्तित होना स्वाभाविक ही था। उनका चेहरा उदास हो उठा। वे घबराये से प्रतीत होने लगे। इतने में चरण-वन्दन के लिए उपस्थित कुमारी मल्ली ने अपने पिता से सविनय निवेदन किया- ''तात! आप चिन्तित क्यों है?''

''तू एक है और तेरे पर अनुरक्त होनेवाले राजा गण छह है। अगर एक को दूँ और पाँच को न दूँ तो वे युद्ध के लिए तत्पर हैं। किसे दूँ और किसे न दूँ। बेटी का जन्मना ही माता-पिता के लिए चिन्ता का कारण है।'' पिता ने पुत्री को समझाया।

पर वह साधारण पुत्री न थी। वह तो विशिष्ट प्रतिभासम्पन्न एवं पिता को हर समय चिन्ता से मुक्त रखने वाली थी, पिता को बेफिक्र बनाती हुई बोली -

''पिताजी! आप निश्चिंत रहिए। उन छहों राजाओं को आमंत्रित कर लीजिए। मैंने सब व्यवस्था बना रखी है। वह है - ''मोहनगृह स्थित मेरे अनुरुप स्वर्ण मंडित पुतलिका।''

बेटी की बात सुनकर महाराजा कुम्भ को अत्याधिक शान्ति प्राप्त हुई। उन्होंने बेखटके उन राजाओं को आमंत्रित किया। वे राजा लोग भी शीघ्रता से मल्ली कुमारी को पाने हेतु मिथिलापुर, जहाँ मोहनगृह था और जहाँ पर मल्लीकुमारी की मूर्ति थी, वहाँ पहुँचे। वे उस प्रतिमा को साक्षात् मल्लीकुमारी समझ कर अनिमेष दृष्टि से देखने लगे।

कुमारी मल्ली ने भी अवसर देखकर उस प्रतिमा

के सिरपर रहे छिद्र के ढक्कन को खोल दिया।

अब तो वह घर दुर्गन्ध से सड़ने लगा। सभी राजाओं का सिर चकराने लगा। वमन की सी हालत बन चुकी। भागने की चेष्टा में संलग्न उन राजाओं ने द्वार को भी बन्द पाया। अब तो जी घबराने लगा।

कुमारी मल्ली ने इस अवसर को उचित समझ, उन राजाओं को प्रतिबोधित करना प्रारम्भ किया –

दुस्सह दुगंध सही नहीं जावे, उठिया नृप हारी।
तब उपदेश दियो श्री मुख से, मोह दशा टारी।।१।।
महा असार औदारिक देही, पुतली इम प्यारी।
श्रृंग किया भटके भव-भव में, नार नरक बारी।।२।।
छहु नृप प्रतिबोध मुनि हो, सिद्ध गति सम्भारी।
विनयचंद चाहत भव-भव में, भक्ति प्रभु थांरी।।३।।

आप किस पर लुभा रहे हैं? यह औदारिक पिंड तो विनश्वर है, क्षण विध्वंस है। इस अशुचिमय देह पर आसक्त होना निरी मूर्खता है। देह आज है, कल नहीं। देखते ही देखते काच की शीशी की तरह यह फूट सकती है। इस प्रकार इस पर इतना इतराना या ममत्व रखना पागलपन है। आप चिन्तन कीजिए – 'देह विनाशी, मैं अविनाशी।' विषयान्ध बन, नारी का संग करने वाले भव-भव में भयंकर कष्ट पाते हैं।

कवि के शब्दों में –

छोटी-मोटी कामनी, सब ही विष की बेल।
वैरी मारे डाव से, नारी मारे हँस खेल।।

आप सचेत बनिये, अन्तरात्मा की ओर झाँकिए। विषयों से आसक्ति हटाईये। जरा सोचिए! पूर्वजन्म में आप कौन, मैं कौन?

भला, त्याग, तप व संयम से दीप्त ओजस्वी वाणी का जादू उन राजाओं पर हुए बिना कैसे रह सकता था? वे जगे और अन्तर्निरीक्षण करते हुए जातिस्मरण ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित हुए और अपना पूर्व भव हस्तामलकवत् जानने व देखने लगे। तत्काल सम्भले और प्रतिबुद्ध हो, भगवती मल्ली के साथ ही मुनि बनने को तत्पर बने। इस प्रकार एक स्त्री होकर भी गृहस्थ जीवन में उन्होंने मार्गदर्शन कर, उन छह राजाओं का आत्म कल्याण किया।

४. भगवती मल्ली ने पूर्वजन्म में महाबल राजा के रूप में अपने छह अन्य राजा मित्रों सहित जैन भागवती दीक्षा स्वीकार की, पर महाबल मुनि अपने बडप्पन के मद को भूल नहीं पाए। अहंकार का नाग फुत्कार कर उठा। वे मन ही मन चिन्तन करने लगे। गृहस्थ जीवन में तो मैं बड़ा था और ये सब छोटे। मैं राजा था और ये मेरे शिष्य हैं। पर अब यदि हम सब की धर्मकरणी एक समान रही तो अवश्य ही आगामी जन्म में अन्तर नहीं होगा। हम सब वहाँ समान स्थिति में होंगे। अतः क्या यही अच्छा हो कि मैं तप-साधना में अन्तर रखूँ।

इस विचार के साथ ही माया ने महाबल मुनि को घेरा। वे कपटपूर्वक तप-साधना करने लगे। जब अन्य मुनि पारणा लेने को जाते तब मुनि महाबल कपटपूर्वक बेला, तेला और उसके अधिक तप बढ़ाने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि महाबल ने स्त्री वेद का बन्ध किया और उसी जन्म में तीर्थंकर नाम कर्म को उपार्जित करानेवाले बीसों स्थानों की साधना-आराधना करके तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन भी किया, अतः उनका स्त्री वेद तीर्थंकर बनने में किसी तरह से बाधक नहीं बना।

इस प्रकार मल्ली भगवती ने उन राजाओं को प्रतिबोध दिया एवं दीक्षाकाल को सन्निकट समझ, लोकान्तिक देवों द्वारा जागृत किए जाने पर वर्षीदान दे, मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी को अश्विन नक्षत्र में तेले की तपश्चर्या से, सौ वर्ष की आयु में छह सौ (जिसमें ३०० पुरुष थे और ३०० स्त्रियाँ थीं) के परिवार से सम्पूर्ण सावद्य कर्म से मुक्त हो दीक्षा ग्रहण की।

दीक्षा ग्रहण करते ही भगवती मल्ली को मनःपर्यव

ज्ञान हुआ तथा अल्प समय बाद ही शुभ परिणाम व अध्यवसाय के कारण उसी दिन केवलज्ञान प्राप्त हुआ। आपका प्रथम तेले का पारणा भी केवली पर्याय में ही हुआ।

सौ वर्ष कम पचपन हजार वर्ष तक केवली पर्याय का पालन करते हुए आपने ग्राम-ग्राम विचरण करते हुए जन-जन को धर्मोपदेश दिया।

इस प्रकार आज का दिन महान मांगलिक है और नारियों के सिर को गौरव-गिरी के उत्तुंग शिखर पर चढ़ाने वाला है। जो नारियाँ अपने को तुच्छ समझती हैं, वे भगवती मल्ली के सुन्दर आदर्श को समक्ष रखकर अपने आपको उन्नत करने की चेष्टा करें तो कर्म बन्धन से सर्वथा मुक्त हो, सिद्धि की अधिकारिणी बन सकती है।

तो आइए, आज के इस कल्याणक पर्व मौन एकादशी के महत्व को ठीक ढंग से समझकर, मौन साधना के माध्यम से अनन्त-अनन्त कर्म वर्गणाओं को काट कर, अक्षय शांति प्राप्त करने की हम प्रेरणा लें। ●

रतन टाटा की सीख

रतन टाटा ने एक स्कूल में भाषण के दौरान १० बाते बताई जो विद्यार्थियों को नहीं सिखाई जाती।

१. जीवन उतार-चढ़ाव से भरा है इसकी आदत बना लो।

२. लोग तुम्हारे स्वाभिमान की परवाह नहीं करते इसलिए पहले खुद को साबित करके दिखाओ।

३. कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद ५ आँकडे वाली पगार की मत सोचो, एक रात में कोई वाइस प्रेसिडेंट नहीं बनता। इसके लिए अपार मेहनत करनी पड़ती है।

४. अभी आपको अपने शिक्षक सख्त और डरावने लगते होंगे क्योंकि अभी तक आपके जीवन में बॉस नामक प्राणी से पाला नहीं पड़ा।

५. तुम्हारी गलती सिर्फ तुम्हारी है, तुम्हारी पराजय सिर्फ तुम्हारी है। किसी को दोष मत दो, गलती से सीखो और आगे बढ़ो।

६. तुम्हारे माता पिता तुम्हारे जन्म से पहले इतने नीरस और ऊबाऊ नहीं थे जितना तुम्हें अभी लग रहा है। तुम्हारे पालन पोषण करने में उन्होंने इतना कष्ट उठाया कि उनका स्वभाव बदल गया।

७. सांत्वना पुरस्कार सिर्फ स्कूल में देखने मिलता है, कुछ स्कूलों में तो पास होने तक परीक्षा दी जा सकती है, लेकिन बाहर की दुनिया के नियम अलग है । वहाँ हारनेवाले को मौका नहीं मिलता।

८. जीवन के स्कूल में कक्षाएँ और वर्ग नहीं होते और वहाँ महीने भर की छुट्टी नहीं मिलती। आपको सीखाने के लिए कोई समय नहीं देता। यह सब आपको खुद करना होता है।

९. टीवी का जीवन सहीं नहीं होता और जीवन टीवी के सीरियल नहीं होते। सही जीवन में आराम नहीं होता सिर्फ काम और सिर्फ काम होता है। क्या आपने कभी ये विचार किया कि लग्जरी क्लास कार (जगुआर, हम्मर, बीएमडब्लू, ऑडी, फेरारी) का किसी टीवी चैनल पर कभी कोई विज्ञापन क्यों नहीं दिखाया जाता? कारण यह कि उन कार कंपनीवालों को ये पता है कि ऐसी कार लेनेवाले व्यक्ति के पास टीवी के सामने बैठने का फालतू समय नहीं होता।

१०. लगातार पढ़ाई करनेवाले और कड़ी मेहनत करनेवाले अपने मित्रों को कभी मत चिढ़ाओ। एक समय ऐसा आएगा कि तुम्हें उनके हाथ के नीचे काम करना पड़ेगा। ●

समाजाची आवड, समाजाची निवड
जैन जागृति